दैनिक भास्कर

रायपुर, 25 जनवरी, 2017

नया रायपुर के पुरखौती मुक्तांगन में शिल्प और कला के जरिये पूरा बस्तर समाहित, अब बारी सरगुजा की

सेंट्रल इंडिया का अनोखा पार्क जहां प्रदेश का कल्चर एक जगह, अब पुरखौती में विरासत दिखाने बनेंगे गांव

गणतंत्र विशेष
छत्तीसगढ़

भास्कर टीम| रायपुर

सिर्फ 10 साल पहले प्रदेशभर की कला और संस्कृति को सहेजने और आने वाली पीढ़ी को राज्य की तमाम विविधताओं से एक ही जगह अवगत कराने के लिए गढ़ा गया पुरखौती मुक्तांगन छत्तीसगढ़ की सबसे बड़ी सांस्कृतिक धरोहर के रूप में डेवलप हो गया है। बस्तर की समृद्ध संस्कृति और ऐतिहासिक भोरमदेव मंदिर की स्थापत्य कला के हूबहू नमूने के बाद अब यहां सरगुजा की पूरी विरासत को सहेजने का काम शुरू हो गया। आने वाले कुछ दिन में यह सेंट्रल इंडिया का अकेला पार्क होने जा रहा है, जिसमें हर टूरिस्ट को कुछ घंटे में ही पूरे प्रदेश की विरासत, कला और संस्कृति को समझने का मौका मिलेगा।

एसेट्स

पुरखौती मुक्तांगन में आदिवासियों की 42 प्रजातियों की कला-संस्कृति देखने को मिलेगी। बस्तर की संस्कृति को सहेजने के लिए पिछले साल यहां आमचो बस्तर के नाम से एक परिसर बनाया गया था। यह राज्यभर के आकर्षण का केंद्र है। इसी की तर्ज पर आमचो सरगुजा बनाया जाएगा। रायपुर, बिलासपुर और राजनांदगांव संभाग के पहाड़ों और जंगलों में फैले मूल निवासियों की कला-संस्कृति को मुक्तांगन में ही चार छोटे-छोटे गांव डेवलप करके दिखाया जाएगा। यहां परंपरागत औजार, मिट्टी-घास से निर्मित घर, दिनचर्या के कामकाज और खेती-बाड़ी देखने को मिलेगी।

यही नहीं, यहां की सभी मशहूर प्राकृतिक जगहों की प्रतिकृति भी तैयार होगी। इस पर संस्कृति विभाग 3 करोड़ रुपए से ज्यादा खर्च करेगा। 200 से एकड़ में फैले मुक्तांगन में सरगुजा के बैगा, बिरहोर, उरांव, कोल, रजवार और घसिया जैसी अनेक आदिवासी संस्कृति के रहन-सहन को करीब से देखने को मिलेगा। वर्तमान में आमचो बस्तर को देखने वाले पर्यटकों को घोटुल,मुरिया घर, देवगुड़ी और थानागुड़ी की संस्कृति लोगों को आकर्षित कर रही है।

लाइव विज्ञाण होगा

बीहड़ क्षेत्रों में रहने वाले आदिवासी आज भी ढेंकी से धान कुटाई करते हैं। सैकड़ों साल पुरानी ढेंकी के एक सिरे को पैर से उठाकर गड्ढे में रखे अनाज पर दबाव से रखा जाता है। इससे अनाज का छिलका निकाला जाता है। फिर सूपा से साफ करने के बाद पकाया जाता है। पशुपालन (गाय, बकरी, सूअर, मुर्गी) के लिए घर में मिट्टी से बनी एक छोटा सा घर होता है। इसी तरह कुछ डिसमील जमीन पर घर, खेती, सिंचाई के लिए कुंआ का प्रबंधन अद्भुत होता है। इसे देखने के बाद पर्यटक इन जगहों पर जाने का प्रयास करते हैं। यह सारी परंपराएं भी पुरखौती में आकार लेने लगी हैं।

उमड़ने लगा पूरा प्रदेश

प्रदेश के पूर्व संस्कृति मंत्री ब्रजमोहन अग्रवाल की परिकल्पना पर आधारित मुक्तांगन में रोजाना सैकड़ों लोग राज्य और बस्तर की कला-संस्कृति को देखने पहुंच रहे हैं। इसी साल एक जनवरी को 18 हजार से ज्यादा पर्यटक पहुंचे। जो अब तक का रिकार्ड है। इससे पहले 2014 में 14 हजार पर्यटक पहुंचे थे। इस साल राज्य के अलावा ओडिसा, आंध्रप्रदेश और महाराष्ट्र से पर्यटक भी आने लगे हैं।

स्थानीय कलाकार बनाएंगे

आमचो बस्तर के निर्माण में लगभग 2 करोड़ रुपए खर्च हुए हैं। इसे बनाने में बस्तर के 180 कलाकारों ने एक साल में आमचो बस्तर का रूप दिया। अब आमचो सरगुजा के निर्माण में 3 करोड़ रुपए खर्च कर चार गांव बनाए जाएंगे। सरगुजा संभाग के आदिवासी कला और संस्कृति को वहीं के स्थानीय कलाकार समझते हैं, इसलिए आमचो सरगुजा का निर्माण भी वही करेंगे।